

ben: पुत्रा चिद्धि ते मनः । अलर्षि युध्म खजकृत् ॥ RV. 8, 4, 7. अलर्षि दत्तं उत मन्युरिन्दो मा नो ध्यायन्नुकामं परा दाः 48, 8. klass. अर्यति P. 7, 4, 30. Pat. zu 3, 1, 22. Kāç. zu 6, 1, 3. herumirren: वने त्वं किमभिररार्यसे BHATT. 4, 21. zu Jmd (acc.) laufen, fliegen: गृधास्तमारार्यत BHATT. 17, 73. Die Form अलर्षति (v. l. अलर्षति) NAIGH. 2, 14 scheint fehlerhaft zu sein. — desid. अरिषति P. 7, 2, 74. Hierher oder zu 1. अर्य् gehört अर्यति und अलर्षति NAIGH. 2, 14. — Vgl. 1. अर्य् und ईरु.

— अनु folgen: अन्वारत्कुम्भकर्णं मरुत्सुतः BHATT. 15, 57. med. nach Jmd sich erheben: अन्वेना अरु विद्युतो मरुतो जङ्गवीरिव भानुरर्त त्वना दिवः RV. 5, 52, 6.

— अप wegschaffen, beseitigen, öffnen: अप द्वारा मतीनां प्रत्ना ऋषवति कारवः RV. 9, 10, 6. क्रत्वा शुकेभिर्नक्तभिर्होषार्यं व्रजं दिवः 102, 8. Hierher gehört wohl die unregelmässige Form अपर्णा (s. d.) entfernt; vgl. अभ्यर्णा.

— अभि dringen zu, erreichen: अभि कुक्षेन रजसा धाम्णिषाति durch dunkeln Dunst dringt er zum Himmelsglanz RV. 1, 35, 9. शिष्टुं न ज्ञातमभ्यारुह्योः 3, 1, 4. Die unregelmässige Form अभ्यर्णा (s. d.) nahe stellen die Grammatiker zu अर्द्ध.

— अय स अवर्ति.

— आ 1) kommen: सीतो जिघांसू — रातसावराताम् BHATT. 6, 28. — 2) erreichen, erlangen, gerathen in (Uebel): माड्भक्तौ शूनमारताम् RV. 3, 33, 13. मुख्यामार्तिमार्प्यसि ÇAT. Br. 1, 6, 1, 16. 4, 2, 11. 3, 6, 1, 29. u. s. w. Ait. Br. 2, 31. — 3) Jmd Etwas anthun: ते तैवैक्य एवमारिष्यति Ait. Br. 3, 33. Hierher gehören auch आर्त partic. und आर्ति nom. act., die man mit doppeltem त् zu schreiben pflegt, weil man sie von अर्द्ध ableitet; s. u. d. Ww. — 4) einfügen, einsetzen: आ घृत्वावात्मनाप्त स्तोतृयो धृञ्जविपानः । ऋणोरत्नं न चव्यैः ॥ RV. 4, 30, 14. आ यदुर्वः शतक्रत्व कामं जरितृणाम् । ऋणोरत्नं न शचीभिः ॥ 15. — caus. zu Theil werden lassen, verhängen: यदा इदं किं चार्कति वरुण एवेदं सर्वमार्पयति ÇAT. Br. 4, 5, 7. partic. praet. pass. आर्पितं befestigt an, angeschlossen an, beruhend auf: तस्मिन्नार्पिता भुवनानि विश्वा RV. 4, 164, 14. अर्द्धे अङ्ग आर्पितं उत्तिस्तश्च AV. 6, 112, 3. सप्त कर्दास चतुराण्यन्यो अर्धस्मिन्वध्यार्पितानि 8, 9, 19. ऋतं ऋत्यामार्पितम् 10, 10, 33. 7, 12, 14. 8, 6. 11, 5, 9. 13, 3, 10. 18, 1, 17.

— उद् 1) sich erheben, aufsteigen: उर्दियर्षि भानुना RV. 10, 140, 2. यस्माद्योर्नैरुर्दियर्षि यजे तम् 2, 9, 3. 4, 58, 1. med.: उर्दस्य शुष्माद्भानुरार्तं 7, 34, 7. — 2) auffragen, aufstreiben, erheben: समुद्राहर्मिमुर्दियर्षि वनः RV. 10, 123, 3. अन्नत्तं शुष्ममुर्दियर्षि भानुना 75, 3. वाचः 1, 113, 7. अयं मे पीत उर्दियर्षि वाचम् 6, 47, 3. — caus. KĀTJ. Ça. 15, 11, 21.

— उप 1) anstossen, ein Versetzen machen: यदा शसा निःशसाभिसेत्यारिम जायते यत्स्वपतः RV. 10, 164, 3. यदस्मृतिं चक्राम किं चिदग्र उपारिम चरणे ज्ञातवदः AV. 7, 106, 1. — 2) beleidigen: मोषाराम विक्षेप्यमानम् AV. 11, 2, 17. — caus. in die Nähe bringen: ता कैके पुरुषमुपायोपदधति ÇAT. Br. 8, 1, 4, 1. परिश्रितस्वेवोपाप्यं ebend.

— नि niederlegen: तमग्निमस्ते वसेवा न्याएवन् RV. 7, 1, 2. त्वे अंसुयर्षि वसेवा न्याएवन् 5, 6. — caus. niederwerfen: न्यर्पयतं वृषणा तमोवधः RV. 7, 104, 1. वृत्ताः श्रे न्यर्पिताः AV. 10, 3, 15.

— निम् 1) sich losmachen, verlustig gehen, versäumen, mit dem abl.:

मा ते गोदत्र निरराम राधसः RV. 8, 21, 16. मा वो दात्रान्मरुतो निरराम 7, 56, 21. निरन्यतश्चिदारत ihr versäumt etwas Anderes (bei अन्यतम् ist dieses Beispiel demnach von 3 zu 1 zu ziehen) 1, 4, 5. — 2) ablösen: अर्द्धे निरर्षत्य न्यर्द्धः क्व स्वित् AV. 10, 2, 2. — partic. praet. pass. निरर्षित aufgelöst, hinfällig: निरर्षितं जराण्यो RV. 1, 119, 7. — caus. auseinandergehen machen, auflösen: इयं (die Erde) वै निरर्षितारिषं वै तं निरर्पयति यो निरर्षकृति ÇAT. Br. 7, 2, 11.

— प्र 1) sich in Bewegung setzen, gehen, ausgehen: प्रो आरत मरुतो इर्मदा इव RV. 4, 39, 5. वर्षश्चित् पत्त्रिणो द्विपञ्चतुष्पदसुनि । उषः प्रारम्भतूरुन् 49, 3. प्र वो रथो मनोज्ञा इत्यति 7, 68, 3. प्र य आरुः शितियुष्ठस्य धासेः 3, 7, 1. — 2) in Bewegung bringen, hervorbringen: प्र वो स विप्रो मन्मानि दीर्घश्रुर्दियर्षि RV. 7, 68, 3. — caus. in Bewegung setzen, anregen: प्राप्या जगत् RV. 1, 113, 4. देवो वः सविता प्रार्पयतु श्रेष्ठतमाय कर्मणे VS. 1, 1.

— प्रति partic. praet. pass. eingefügt: अरणी प्रत्यत् एने अग्निः Nir. 5, 10. — caus. 1) entgegenwerfen: प्रत्यक्षमर्कं प्रत्यर्पयित्वा (P. 7, 1, 38, Sch.) AV. 12, 2, 55. — 2) befestigen, anbringen: स्तनेषु प्रत्यर्पिताः — द्वाराः RAGH. 6, 28. — 3) übergeben RAGH. 13, 41. — 4) zurückgeben, wiedergeben: यथार्पितान्प्रभूणोपः सायं प्रत्यर्पयेत्तथा JĀG. 2, 164. MĀKĀH. 130, 9. ÇĀK. 97. ÇĀK. CH. 61, 5. RAGH. 6, 2. 7, 27. 13, 65. von Neuem geben: राशे पृथ्वीं तदर्पिताम् । प्रत्यर्प्य तस्मै स यथो नर्दधिर्दर्शनम् ॥ KATHĀS. 21, 36.

— वि 1) auseinandergehen, sich auflun: अलातुणो वल ईन्द्र व्रजो गोः पुरा क्लेशोर्मयमानो व्यार RV. 3, 30, 10. — 2) aufthun, eröffnen, ausbreiten: वि द्वारावृणवो दिवः RV. 1, 48, 15. 69, 10 (5). व्यानुषावर्षा देव ऋषवति 58, 3. अग्निद्वारा व्युषवति 128, 6. वि कृच्यमग्निराणुषभगो न वारैमृषवति 5, 16, 2. med.: व्युषिरे (व्रजम्) 10, 25, 5.

— सम् act. 1) zu Stande kommen: अग्निर्धिया समृषवति RV. 3, 11, 2. — 2) zu Stande bringen: धिया रथे न कुलिशः समृषवति RV. 3, 2, 1. — med. P. 4, 3, 29, VArtt. 2. मा समृत, समर्त Sch. समारत 3, 1, 56, Sch. समिपृते VOP. 23, 14. 1) zusammenlaufen, zusammenkommen: ऋतस्य योना समरत् नभयः RV. 9, 73, 1. अन्नं यत्तमनु ताः समृषवताम् AV. 12, 2, 9. सं पृच्छसे समराणाः शुभानैः RV. 4, 163, 3. समराणो ऊर्मिभिः पिन्वमाने 3, 33, 2. समारत ममाभीष्टाः संकल्पास्त्वयुपगते BHATT. 8, 16. — 2) zusammenstossen, zusammentreffen: समन्यवो यत्समरत् सेनाः RV. 7, 23, 1. (रुद्रेण) मा समरामहि AV. 11, 2, 7. 20. समंतेषु धृजेषु RV. 10, 103, 11. Vgl. समृति. — 3) zusammentreiben, scheuchen: कथा न क्षोणीर्भियसा समारत (3. sg.) RV. 1, 54, 1. — caus. 1) auf Jmd (acc.) schleudern, treffen: तां वज्रेण समर्पय AV. 5, 22, 6. समर्पयेन्द्र मक्ता वधेन 6, 66, 1. med.: क्लिष्टेण यत्नस्य समर्पयधं शैरः MBh. 1, 6978. — 2) befestigen, hineinstecken, hineinlegen: यथा रथनभौ च रथनेवौ चाराः सर्वे समर्पिता एवम् u. s. w. ÇAT. Br. 14, 5, 5, 15 = BṚH. ĀR. UP. 2, 5, 15. यथा वा अरा नभौ समर्पिता एवमस्मिन्प्राणे सर्वे समर्पितम् KĀHĀND. UP. 7, 13, 1. MUND. UP. 2, 2, 1. RAGH. 4, 48. अग्रकृस्ते मुकुलीकृताङ्गुलौ समर्पयन्ती (einhängend) स्फटिकाक्षमालिकाम् KUMĀRAS. 5, 63. मनस्वी तद्वतमनास्तस्या हृदि समर्पितः (in ihrem Herzen ruhend) R. 1, 77, 25. — 3) auflegen, auftragen: अलिख्यसमर्पितं auf ein Bild aufgetragen, gemahlt RAGH. 3, 15; vgl. das caus. des simpl. u. 4. — 4) übergeben, übertragen: ईदृशान्येव मकारत्नानि बहूनि तव कृस्ते समर्पितानि Vrt. 2, 16, 17. तस्मै (auch gen. und loc.) समर्पयैताम् (zum Unterrichts)